सूरदास

जीवन-परिचय :—

अष्टछाप के जहाज सूरदास जी का जन्म सन् 1478 ई० में रुनकता नामक गाँव में हुआ था। परन्तु मतभेद है। कुछ विद्वान दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ मानते हैं। बचपन से ही विरक्त हो गए और गऊघाट पर रहने लगे। वल्लभाचार्य जी ने इन्हे अपना शिष्य बनाया और गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तन करने के लिए रख लिया। बल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ जी ने अष्टछाप की स्थापना की।

इनकी मृत्यु पारसौली ग्राम में 1583 ई० में हुई।

Gyansindhu Coaching Classes

कृतियाँ :—

सूरदास जी के पदो का संकलन 'सूरसागर' है। 1107 छन्द हैं। 'सूरसारावली' एवं 'साहित्य-लहरी' इनके अन्य ग्रन्थ हैं।

साहित्य-लहरी में 118 पदो का संग्रह है।

रचना-क्रिक —

साहित्य लहरी, सूरसागर, सूरकी सारावली।
श्रीकृष्ण जी की बाल-छवि पर लेखनी अनुपम चली॥

Scanned by TapScanner

जन्म–सन् 1478 ई०।

जन्म-स्थान—रुनकता।

पिता-रामदास सारस्वत।

मृत्यु–सन् 1583 ई०।

भाषा–ब्रज।

अष्टछाप एवं भक्तिकाल के कवि।

रचनाएँ- सूरसागर, साहित्य लहरी,
सूर सारावली।

Scanned by TapScanner